



Prakriti

22 Mar 2000

05:15 PM

Varanasi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119289001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 22/03/2000
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 17:15:00 घंटे
इष्ट _____: 28:07:09 घटी
स्थान _____: Varanasi
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:20:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:02:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 17:17:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:50 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:18:09 घंटे
सूर्योदय _____: 06:00:08 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:09:57 घंटे
दिनमान _____: 12:09:49 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 08:18:04 मीन
लग्न के अंश _____: 26:41:13 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: व्याघात
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: री-रीतेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1922	चैत्र	2
पंजाबी	संवत : 2056	चैत्र	9
बंगाली	सन् : 1406	चैत्र	8
तमिल	संवत : 2056	पंगुनी	9
केरल	कोल्लम : 1175	मीनम	9
नेपाली	संवत : 2056	चैत्र	9
चैत्रादि	संवत : 2056	चैत्र	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2056	फाल्गुन	कृष्ण 2

पंचांग

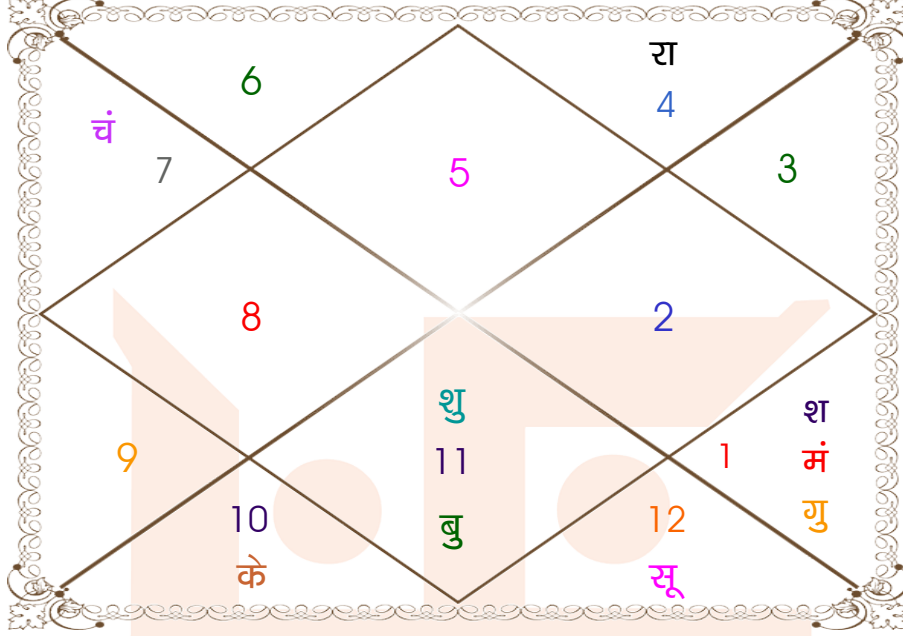
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
 तिथि समाप्ति काल _____ : 09:02:28
 जन्म तिथि _____ : 3
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:45:47 घंटे
 जन्म योग _____ : चित्रा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
 योग समाप्ति काल _____ : 09:10:21 घंटे
 जन्म योग _____ : व्याघात
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 09:02:28 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 60:01:10
 भभोग _____ : 61:18:07
 भोग्य दशा काल _____ : मंगल 0 वर्ष 1 मा 22 दि

घात चक्र

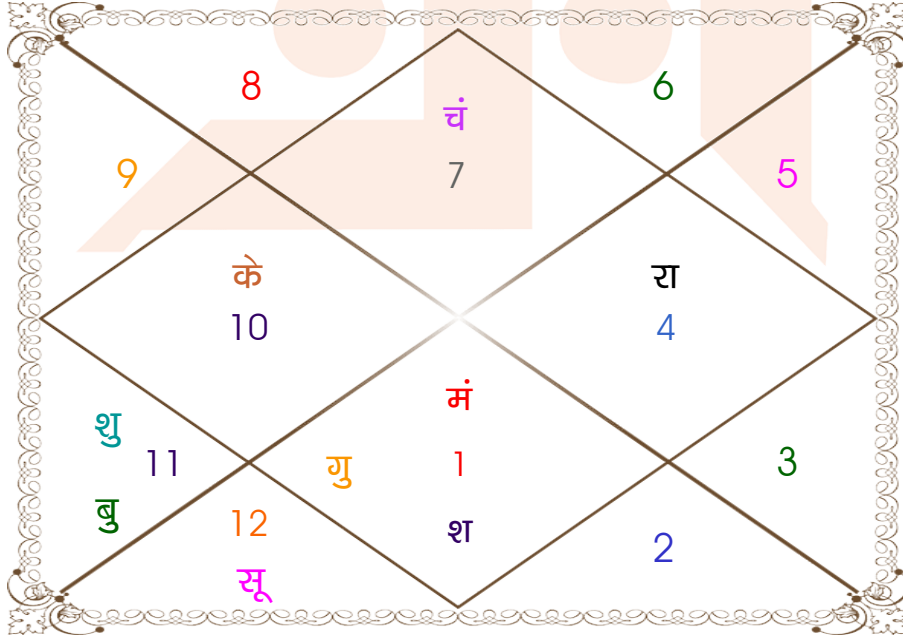
मास _____ : माघ
 तिथि _____ : 4-9-14
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : शतभिषा
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : तैतिल
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : कन्या
 सूर्य _____ : कन्या
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : तुला
 बुध _____ : कर्क
 गुरु _____ : वृश्चिक
 शुक्र _____ : धनु
 शनि _____ : सिंह
 राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

सू	श मं गु		
शु बु			रा
के			ल
		चं	

लग्न कुंडली

	श मं गु	सू	शु बु
रा			के
ल		चं	

विंशोत्तरी
मंगल 0वर्ष 1मा 22दि
मंगल

22/03/2000

15/05/2113

मंगल	14/05/2000
राहु	15/05/2018
गुरु	15/05/2034
शनि	14/05/2053
बुध	15/05/2070
केतु	14/05/2077
शुक्र	14/05/2097
सूर्य	16/05/2103
चन्द्र	15/05/2113

योगिनी
मंगला 0वर्ष 0मा 7दि
सिद्धा

30/03/2020

31/03/2027

सिद्धा	09/08/2021
संकटा	28/02/2023
मंगला	10/05/2023
पिंगला	29/09/2023
धान्या	29/04/2024
भ्रामरी	07/02/2025
भद्रिका	28/01/2026
उल्का	31/03/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



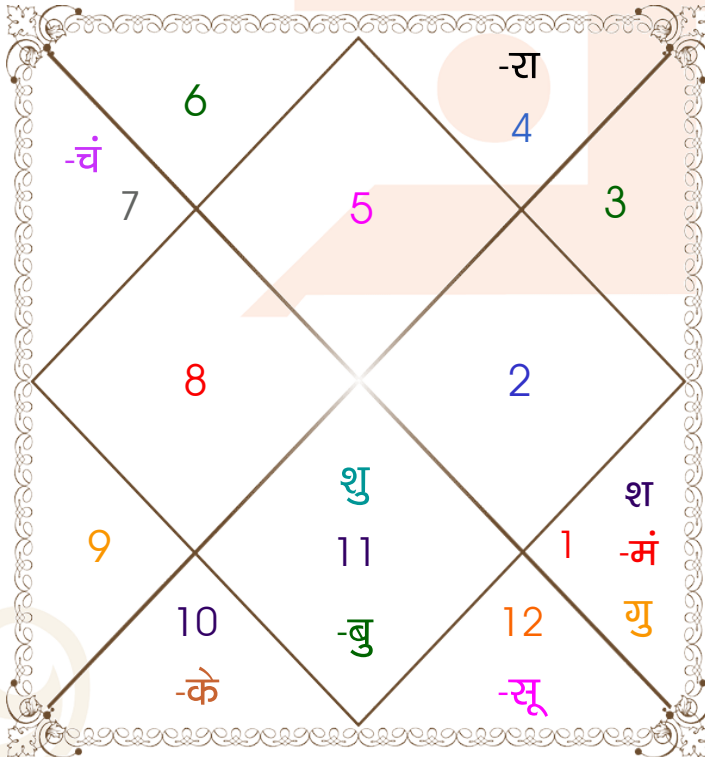
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	26:41:13	325:41:30	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	---
सूर्य			मीन	08:18:04	00:59:31	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			तुला	06:23:28	12:53:45	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
मंगल			मेष	05:43:31	00:44:08	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	मूलत्रिकोण
बुध			कुंभ	11:32:27	00:38:28	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
गुरु			मेष	13:12:49	00:13:02	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	मित्र राशि
शुक्र			कुंभ	17:16:08	01:14:06	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	मित्र राशि
शनि			मेष	20:35:36	00:06:23	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	नीच राशि
राहु	व		कर्क	07:53:04	00:10:22	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	07:53:04	00:10:22	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	25:23:16	00:02:46	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	---
नेप			मक	12:07:31	00:01:28	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	19:01:55	00:00:14	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	---
दशम भाव			वृष	26:31:30	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	गुरु	--

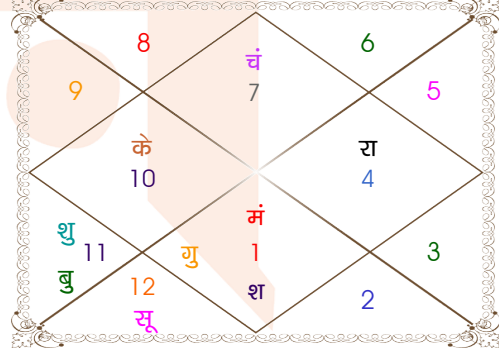
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:22

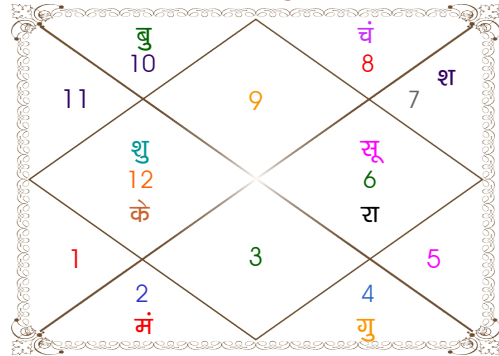
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 11:39:36	सिंह 26:41:13
2	कन्या 11:39:36	कन्या 26:37:59
3	तुला 11:36:21	तुला 26:34:44
4	वृश्चिक 11:33:07	वृश्चिक 26:31:30
5	धनु 11:33:07	धनु 26:34:44
6	मकर 11:36:21	मकर 26:37:59
7	कुम्भ 11:39:36	कुम्भ 26:41:13
8	मीन 11:39:36	मीन 26:37:59
9	मेष 11:36:21	मेष 26:34:44
10	वृष 11:33:07	वृष 26:31:30
11	मिथुन 11:33:07	मिथुन 26:34:44
12	कर्क 11:36:21	कर्क 26:37:59

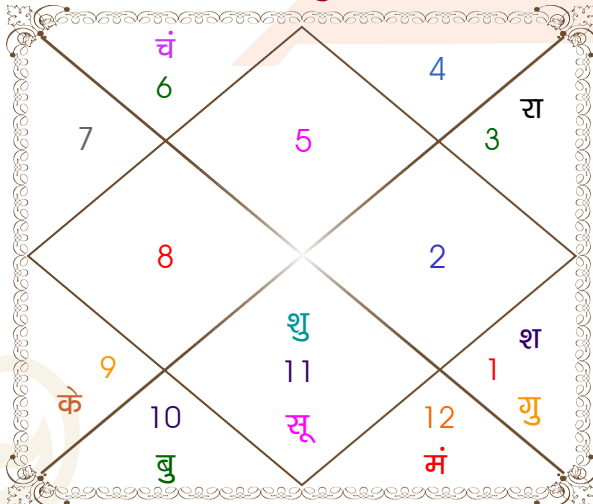
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह 26:41:13	
2	कन्या 24:48:05	
3	तुला 25:16:11	
4	वृश्चिक 26:31:30	
5	धनु 27:34:22	
6	मकर 27:54:36	
7	कुम्भ 26:41:13	
8	मीन 24:48:05	
9	मेष 25:16:11	
10	वृष 26:31:30	
11	मिथुन 27:34:22	
12	कर्क 27:54:36	

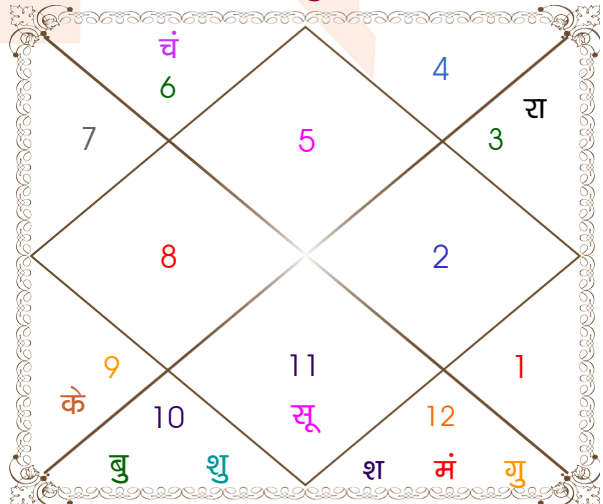
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 1 मास 22 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
22/03/2000	14/05/2000	15/05/2018	15/05/2034	14/05/2053
14/05/2000	15/05/2018	15/05/2034	14/05/2053	15/05/2070
00/00/0000	राहु 25/01/2003	गुरु 02/07/2020	शनि 17/05/2037	बुध 11/10/2055
00/00/0000	गुरु 20/06/2005	शनि 13/01/2023	बुध 25/01/2040	केतु 07/10/2056
00/00/0000	शनि 26/04/2008	बुध 20/04/2025	केतु 05/03/2041	शुक्र 08/08/2059
00/00/0000	बुध 13/11/2010	केतु 27/03/2026	शुक्र 05/05/2044	सूर्य 14/06/2060
00/00/0000	केतु 02/12/2011	शुक्र 25/11/2028	सूर्य 17/04/2045	चंद्र 13/11/2061
00/00/0000	शुक्र 01/12/2014	सूर्य 13/09/2029	चंद्र 16/11/2046	मंगल 10/11/2062
00/00/0000	सूर्य 26/10/2015	चंद्र 13/01/2031	मंगल 26/12/2047	राहु 30/05/2065
22/03/2000	चंद्र 26/04/2017	मंगल 20/12/2031	राहु 01/11/2050	गुरु 04/09/2067
चंद्र 14/05/2000	मंगल 15/05/2018	राहु 15/05/2034	गुरु 14/05/2053	शनि 15/05/2070

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
15/05/2070	14/05/2077	14/05/2097	16/05/2103	15/05/2113
14/05/2077	14/05/2097	16/05/2103	15/05/2113	23/03/2120
केतु 11/10/2070	शुक्र 13/09/2080	सूर्य 01/09/2097	चंद्र 15/03/2104	मंगल 11/10/2113
शुक्र 11/12/2071	सूर्य 13/09/2081	चंद्र 03/03/2098	मंगल 14/10/2104	राहु 30/10/2114
सूर्य 17/04/2072	चंद्र 15/05/2083	मंगल 08/07/2098	राहु 15/04/2106	गुरु 06/10/2115
चंद्र 16/11/2072	मंगल 14/07/2084	राहु 02/06/2099	गुरु 15/08/2107	शनि 14/11/2116
मंगल 14/04/2073	राहु 15/07/2087	गुरु 21/03/2100	शनि 15/03/2109	बुध 11/11/2117
राहु 02/05/2074	गुरु 15/03/2090	शनि 03/03/2101	बुध 15/08/2110	केतु 09/04/2118
गुरु 08/04/2075	शनि 14/05/2093	बुध 08/01/2102	केतु 16/03/2111	शुक्र 09/06/2119
शनि 17/05/2076	बुध 14/03/2096	केतु 16/05/2102	शुक्र 14/11/2112	सूर्य 15/10/2119
बुध 14/05/2077	केतु 14/05/2097	शुक्र 16/05/2103	सूर्य 15/05/2113	चंद्र 23/03/2120

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 1 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल
20/04/2025	27/03/2026	25/11/2028	13/09/2029	13/01/2031
27/03/2026	25/11/2028	13/09/2029	13/01/2031	20/12/2031
केतु 10/05/2025	शुक्र 05/09/2026	सूर्य 09/12/2028	चंद्र 24/10/2029	मंगल 02/02/2031
शुक्र 06/07/2025	सूर्य 24/10/2026	चंद्र 03/01/2029	मंगल 21/11/2029	राहु 25/03/2031
सूर्य 23/07/2025	चंद्र 13/01/2027	मंगल 20/01/2029	राहु 02/02/2030	गुरु 10/05/2031
चंद्र 20/08/2025	मंगल 11/03/2027	राहु 05/03/2029	गुरु 08/04/2030	शनि 03/07/2031
मंगल 09/09/2025	राहु 04/08/2027	गुरु 13/04/2029	शनि 24/06/2030	बुध 20/08/2031
राहु 30/10/2025	गुरु 12/12/2027	शनि 29/05/2029	बुध 01/09/2030	केतु 09/09/2031
गुरु 15/12/2025	शनि 14/05/2028	बुध 09/07/2029	केतु 30/09/2030	शुक्र 05/11/2031
शनि 07/02/2026	बुध 29/09/2028	केतु 26/07/2029	शुक्र 20/12/2030	सूर्य 22/11/2031
बुध 27/03/2026	केतु 25/11/2028	शुक्र 13/09/2029	सूर्य 13/01/2031	चंद्र 20/12/2031
गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र
20/12/2031	15/05/2034	17/05/2037	25/01/2040	05/03/2041
15/05/2034	17/05/2037	25/01/2040	05/03/2041	05/05/2044
राहु 29/04/2032	शनि 05/11/2034	बुध 04/10/2037	केतु 18/02/2040	शुक्र 14/09/2041
गुरु 24/08/2032	बुध 09/04/2035	केतु 30/11/2037	शुक्र 26/04/2040	सूर्य 11/11/2041
शनि 10/01/2033	केतु 12/06/2035	शुक्र 13/05/2038	सूर्य 16/05/2040	चंद्र 15/02/2042
बुध 14/05/2033	शुक्र 12/12/2035	सूर्य 01/07/2038	चंद्र 19/06/2040	मंगल 24/04/2042
केतु 04/07/2033	सूर्य 05/02/2036	चंद्र 21/09/2038	मंगल 12/07/2040	राहु 14/10/2042
शुक्र 28/11/2033	चंद्र 07/05/2036	मंगल 17/11/2038	राहु 11/09/2040	गुरु 17/03/2043
सूर्य 10/01/2034	मंगल 10/07/2036	राहु 14/04/2039	गुरु 04/11/2040	शनि 17/09/2043
चंद्र 24/03/2034	राहु 22/12/2036	गुरु 23/08/2039	शनि 07/01/2041	बुध 27/02/2044
मंगल 15/05/2034	गुरु 17/05/2037	शनि 25/01/2040	बुध 05/03/2041	केतु 05/05/2044
शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु
05/05/2044	17/04/2045	16/11/2046	26/12/2047	01/11/2050
17/04/2045	16/11/2046	26/12/2047	01/11/2050	14/05/2053
सूर्य 22/05/2044	चंद्र 04/06/2045	मंगल 10/12/2046	राहु 30/05/2048	गुरु 04/03/2051
चंद्र 20/06/2044	मंगल 08/07/2045	राहु 09/02/2047	गुरु 16/10/2048	शनि 29/07/2051
मंगल 10/07/2044	राहु 03/10/2045	गुरु 04/04/2047	शनि 30/03/2049	बुध 07/12/2051
राहु 31/08/2044	गुरु 19/12/2045	शनि 07/06/2047	बुध 24/08/2049	केतु 30/01/2052
गुरु 17/10/2044	शनि 20/03/2046	बुध 03/08/2047	केतु 24/10/2049	शुक्र 02/07/2052
शनि 11/12/2044	बुध 10/06/2046	केतु 27/08/2047	शुक्र 15/04/2050	सूर्य 17/08/2052
बुध 29/01/2045	केतु 14/07/2046	शुक्र 02/11/2047	सूर्य 07/06/2050	चंद्र 03/11/2052
केतु 18/02/2045	शुक्र 18/10/2046	सूर्य 22/11/2047	चंद्र 01/09/2050	मंगल 27/12/2052
शुक्र 17/04/2045	सूर्य 16/11/2046	चंद्र 26/12/2047	मंगल 01/11/2050	राहु 14/05/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 6, 9
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

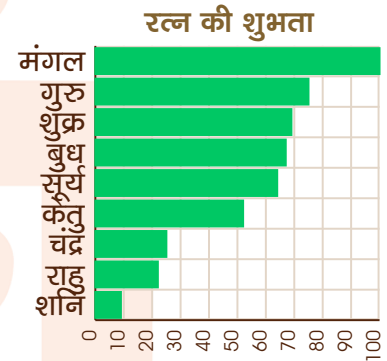


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, सुख
पुखराज	गुरु	75%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	69%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	67%	दम्पति, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मोती	चंद्र	25%	पराक्रम हानि, व्यय
गोमेद	राहु	22%	व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	9%	नेष्ट भाग्य, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	14/05/2000	70%	38%	100%	55%	81%	69%	9%	0%	58%
राहु	15/05/2018	52%	0%	88%	67%	75%	75%	22%	47%	28%
गुरु	15/05/2034	70%	38%	100%	55%	88%	56%	9%	22%	52%
शनि	14/05/2053	52%	0%	88%	73%	75%	75%	34%	34%	28%
बुध	15/05/2070	70%	0%	100%	80%	75%	75%	9%	22%	52%
केतु	14/05/2077	52%	0%	100%	67%	75%	75%	0%	0%	64%
शुक्र	14/05/2097	52%	0%	100%	73%	75%	81%	22%	34%	58%
सूर्य	16/05/2103	77%	38%	100%	67%	81%	56%	0%	0%	28%
चंद्र	15/05/2113	70%	50%	100%	73%	75%	69%	9%	0%	28%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक उन्नति
धन
पराक्रम
सुख हानि
शत्रु व रोग मुक्ति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में भी उग्रता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन ये अल्पकालिक रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप पित या गर्मी आदि से यदा कदा परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है लेकिन अंततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्यतया संतोषप्रद रहेगा।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी भी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य क्षेत्र में परिश्रम तथा पराक्रम से सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा कोध के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति भी प्रभावित होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव आपके पारिवारिक जीवन में नहीं होगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक खुशहाल एवं सुखी बनाने के लिए आपको किसी ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसके द्वारा आपका मंगली दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार दोष के भंग होने

पर आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

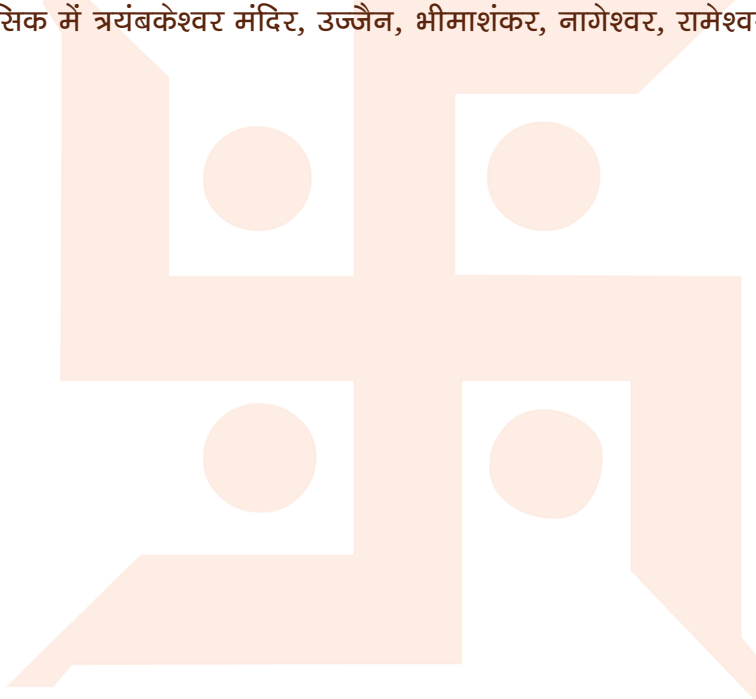
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।

14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभान्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

नवम भाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उत्सवभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु
(15/05/2018 - 15/05/2034)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 15/05/2018 आरम्भ और 15/05/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम् भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य :

नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय :

आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश-गमन का अवसर मिलेगा और आप वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम् भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनन्दमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनन्द मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपका झुकाव पुराणों तथा धर्मिक पुस्तकों की ओर होगा तथा अपना अधिकतर समय आप इन्हीं विषयों के अध्ययन में लगाएंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(13/01/2023 - 20/04/2025)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 15/05/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 13/01/2023 को प्रारंभ होकर 20/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में सफलता मिलेगी। व्यापार और शेयरों में लाभ होगा। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार से विचार-विनिमय उत्तम होगा। टेलीविजन, लेखन आदि द्वारा विचार-विमर्श में भाग ले सकते हैं। कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनागम की संभावना है। विद्वानों की संगत में शामिल होंगे। ज्योतिष, धर्म, गणित और कविता में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सुख-साधनों से युक्त रहेंगे; ज्ञान-विज्ञान में रुचि लेंगे। आपके पिता के बहुत से मित्र होंगे; सम्मान, प्रसन्नता और समृद्धि की संभावना है। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश और शेयरों से लाभ, यात्रा, संचार माध्यम से लाभ, दर्शनशास्त्र से आय का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; मानसिक क्रियाशीलता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(20/04/2025 - 27/03/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 15/05/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 20/04/2025 को प्रारंभ होकर 27/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विरोध और बाधाएं संभव हैं। मातहतों और सहकर्मियों से संबंध उत्तम रहेंगे। माता पक्ष के लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। किरायेदार सहयोग करेंगे; किराये से अच्छी आमदनी हो सकती है। ज्ञानार्जन होगा; अध्यात्म में रुचि होगी। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। नयी मित्रता से लाभ हो सकता है, कार्यों में सफलता मिलेगी, प्रसिद्धि मिलेगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे

; धनार्जन उत्तम होगा। माता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, माता से मधुर संबंध, परिवर्तन और धन के संचय का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रसन्न रहेंगे, अपने पैरों पर खड़े होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं की किस्मत चमकेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों, दांतों और गुदा के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(27/03/2026 - 25/11/2028)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 15/05/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 27/03/2026 को प्रारंभ होकर 25/11/2028 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह हो सकता है। जीवनसाथी से खुशियां मिलेंगी, उनसे धन का लाभ हो सकता है। आकर्षक और मधुर व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध होंगे। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज की अदायगी कर सकेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। कला में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता सफल होंगे, उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता धनी बनेंगी; वाहन और अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, संतान से खुशी, उत्तम शिक्षा, कला में रुचि, यात्रा, धन, सुख-साधन, अध्यात्म और धर्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान की कला में रुचि होगी; वे प्रसिद्ध और सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सफलता आसानी से मिल जाएगी, यात्रा होगी, विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। परामर्शदाता और व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(25/11/2028 - 13/09/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 15/05/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह

25/11/2028 को प्रारंभ होकर 13/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। विरासत, बीमा, ग्रेच्युटी, बोनस आदि से लाभ हो सकता है। सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी। वाक्शक्ति उत्तम होगी। धन पर्याप्त रहेगा, सरकार से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी होंगे; उन्हें पिता से लाभ होगा। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं; खर्च बढ़ेंगे। माता को उच्चपद मिल सकता है, धनी बनेंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उच्चपद, कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजय होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, संचार माध्यम और विज्ञापन जगत से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कई माध्यमों से धनागम होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का 40 दिन तक पाठ करें।

अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(13/09/2029 - 13/01/2031)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 15/05/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 13/09/2029 को आरंभ होकर 13/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। वाक्शक्ति उत्तम होगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। उत्तम वस्त्र प्राप्त होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। लघु यात्राएं हो सकती हैं। भाग्यशाली, प्रसन्न और धनी होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी बनेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता के खर्च बढ़ सकते हैं; यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से लाभ, सुखी पारिवारिक जीवन, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, बहुत से मित्र होंगे, सफलता मिलेगी। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कुमारी कन्या को हरे वस्त्र
दान में दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com